

डा० आभा गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर-हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय जखिनी-वाराणसी विषय - हिन्दी

नई शिक्षा नीति - २०२० बी.ए.- प्रथम सेमेस्टर (मेजर)

शीर्षक – गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय भावना

स्वघोषणा - यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक / वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतया प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे। और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय भावना

तुलसीदास जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। इनका साहित्य जनता में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। तुलसी- दास के लोकप्रियता का प्रमुख कारण उनकी समन्वय बुद्धि है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखा है – “ भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो क्योंकि भारतीय समाज में नाना भाँति की परस्पर- विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार निष्ठा और विचार- पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वय कारी थे, गीता में समन्वय की चेष्टा है और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।”^[1]

तत्कालीन समाज नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर था। इस स्थिति को देखकर तुलसीदास को अत्यन्त पीड़ा हुई। उन्होंने स्थिति को समाप्त करने की बीड़ा उठाया। उन्होंने भारत देश की विभिन्न विचार पद्धतियों, साधनाओं, विरोधी संस्कृतियों और विभिन्न जातियों में सांमजस्य, स्थापित करके जीवन, साहित्य और दर्शन सभी क्षेत्रों में समन्वयवाद का विराट आदर्श प्रस्तुत किया।

तुलसी ने बड़ी कुशलता से, बिना किसी को ठेस पहुँचाये अपने आदर्शों को जनता के सम्मुख रखा और उसे मानने के लिए विवश किया। गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय भावना उनके काव्य में निम्न लिखित रूप में दिखाई देते हैं।

1. धार्मिक समन्वय
2. निर्गुण-सगुण का समन्वय
3. वैष्णव, शाक्त और शैव का समन्वय
4. कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय
5. सामाजिक समन्वय
6. व्यक्ति और समाज का समन्वय
7. ब्राह्मण और शूद्र का समन्वय
8. राजा और प्रजा का समन्वय
9. संत और असंत का समन्वय
10. व्यक्ति और परिवार का समन्वय

सन्दर्भ सूची

1- हिन्दी काव्य - डा. ए. के. सिंह - पृष्ठ -168